Aparna Bidasaria

bidasariaaparna@yahoo.com
+91 94250 62260

प्रेस विज्ञप्ति

बरगद के वृक्षों पर आधारित अपर्णा बिदासरिया की चलित प्रदर्शनी अब मायानगरी में आयोजित होगी

- उमा नायर द्वारा क्युरेट की गई ''टाइम एंड बीइंग'' प्रदर्शनी 14 से 20 अगस्त तक मुंबई के जहांगीर आर्ट गैलरी में आयोजित होगी।
- सुप्रसिद्ध कलाकार ब्रिंदा मिलर 14 अगस्त को प्रदर्शनी का उदघाटन करेंगी।

मुंबई, 8 अगस्त : बचपन में वह निस्तेज शांति के साथ अनंतकाल से खड़े बरगद के पेड़ को देखकर सम्मोहित हुए बगैर नहीं रहती थी। बरगद के वृक्ष के पत्तों की हलचल विशेष तरह का संगीत पैदा करती थी, झुलसा देने वाली गर्मियों की धूप में लोग इसके घने पत्तों की छाया में आकर सुकून महसूस करते थे। धरती में अपना ठिकाना ढूंढने के लिए नीचे की ओर लटकती इसकी जड़ें और आकाश की ओर बढ़ती इसकी शाखाएं। ये सब मिलकर समय एवं अनंतता के बीच आकाशीय संवाद उत्पन्न करते हुए प्रतीत होते हैं।

बचपन का यह आकर्षण समय के साथ बढ़ता गया और इससे एक तरह की संवेदनशीलता का विकास हुआ और इसी ने इंदौर की कलाकार अपर्णा बिदासरिया को अद्भुत रचनात्मकता के साथ बरगद के वृक्ष को खूबसूरत कैनवास में उतारने को प्रेरित किया। भोपाल और दिल्ली में इस कलाकार को मिली समालोचनात्मक प्रशंसा के बाद ये विचारोत्तेजक पेटिंग्स अब चलित प्रदर्शनी का स्वरूप ले चुकी है और अब यह प्रदर्शनी मुंबई में आयोजित होने जा रही है।

''टाइम एंड बीइंग'' शीर्षक वाली यह प्रदर्शनी 14 से 20 अगस्त तक जहांगीर आर्ट गैलरी (हिजरी गैलरी) में आयोजित होगी। प्रसिद्ध कलाकार ब्रिंदा मिलर इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करेंगी। इस प्रदर्शनी में बरगद के वृक्ष की विभिन्न आकृतियों को उकेरनी वाली पेंटिग्स को शामिल किया जा रहा है।

सात दिन तक चलने वाली इस प्रदर्शनी को प्रसिद्ध विद्वान एवं समालोचक उमा नायर ने क्युरेट किया है। इस प्रदर्शनी में सम्पूर्ण मनोयोग से एकल रंगों एवं विविध रंगों में बनाई गई कुल 35 पेंटिंग्स को प्रदर्शित किया जाएगा। ये पेंटिंग्स किसी पट्टिका पर लिखी कविता की तरह प्रतीत होती हैं।

अपर्णा कहती हैं, ''बरगद का जादू मुझे हमेशा विस्मित करता है। यह अब मेरी कलात्मक संवेदनशीलता और शिल्प के साथ घुल मिल गया है। मैं दुनिया को यह बताना चाहती हूं कि मनुष्य और प्रकृति के बीच एक जीवंत अंतर–सम्बन्ध है। जब लोग मेरी कृतियों को देखते हैं तो वे कई मिनट के लिए मौन रह जाते हैं, वैसे में मुझे पता होता है कि वे मेरी कृति को महसूस कर रहे हैं।'' अपर्णा सूर्योदय और सूर्यास्तों के काल क्षेत्र में बरगद के वृक्ष को उकेरने के लिए मिट्टी, लकड़ी का कोयला, पेस्टेल, स्याही और ऐक्रेलिक का उपयोग करती हैं।

अपर्णा की विशिष्टता बरगद के पेड़ के साथ उनके गहरे रचनात्मक जुनून और उसकी कलात्मक एवं सूक्ष्म अभिव्यक्ति में निहित है जिसमें विचारों की भव्यता और रचनात्मक सूक्ष्मता शामिल है। वह कहती हैं, ''वान

Aparna Bidasaria

bidasariaaparna@yahoo.com
+91 94250 62260

गोघ, सेराट और जैक्सन पोलक जैसे प्रभाववादियों और अभिव्यक्तिवादियों से प्रेरित हूं। हालांकि मेरी भाषा विचार में भारतीय है, लेकिन मैं जिस व्याकरण का उपयोग करती हूं वह पश्चिम का है।''

अपर्णा कहती हैं, ''मैंने भोपाल (भारत भवन) और फिर दिल्ली (श्रीधरानी आर्ट गैलरी) में प्रदर्शनी की शुरूआत की। मुझे लोगों से जो प्रतिक्रिया मिली वह मेरी कल्पना से परे थी। मैंने कलाकारों, आलोचकों और लोगों से जो सकारात्मक ऊर्जा पाई उसने मुझे बहुत ताकत दी।'' अपर्णा ने सोफिया कॉलेज, मुंबई से स्नातक किया और फिर डीएवीवी, इंदौर से ड्राइंग और पेंटिंग में स्नातकोत्तर किया।

जहांगीर आर्ट गैलरी में आयोजित होने वाली प्रदर्शनी चलित प्रदर्शनी का अंतिम चरण है। उन्होंने कहा, ''मैं अपनी कृतियों को लेकर मुंबईवासियों की प्रतिक्रिया को जानने के लिए उत्साहित हूं।''

क्यूरेटर उमा नायर ने कहा कि पेंटिंग बिल्कुल अनोखी हैं क्योंकि ये एक ही पेड़ पर आधारित हैं। वह कहती हैं, ''मुझे नहीं लगता कि किसी ने कभी भी कैनवास पर इतने सारे मूड और पहलुओं में बरगद को चित्रित करने का प्रयास किया है। यह बरगद के पेड़ पर ध्यान की तरह है।''

अपर्णा ने अमूर्त अभिव्यक्तिवाद और अतिसूक्ष्मवाद के रूप में अनिवार्य स्थिरता और रचनात्मक सद्भाव के साथ पेटिंग्स को नया अवतार दिया। वह कहती हैं, ''यह उनकी अपनी सांस्कृतिक नींवों के लिए निरंतर खोज की एक कसौटी है जिसमें बरगद को पवित्र और अपवित्र दोनों माना जाता है।''

कलाकार अपने चित्रों में एक अद्वितीय असली ब्रह्मांड का निर्माण करती है जिसमें बरगद के वृक्ष सुखद सादगी पैदा करते हैं, और यह पुरानों में वर्णित प्रकृति के साथ मनुष्य की एकता की अवधारणा और प्राचीन विश्वास का प्रतीक है।

बरगद के वृक्ष का वैभव अपर्णा के करियर का एक असाधारण परिष्कृत उदाहरण है और यह उनकी शैलियों, तकनीकों और विषयों में उनकी कलात्मक यात्रा की परिणति है। क्युरेटर कहती हैं, ''कलाकार होने के बारे में उनकी भावनाओं का एक रूपक भी है। साथ ही साथ अलगाव और एकांत की भावना के साथ–साथ आध्यात्मिक अभिलाषाओं के लिए उनकी आकांक्षाओं का भी पूरक है। इस प्रक्रिया में, वह एक ऐसी कला की रचना करती हैं जो राष्ट्रीय और सांस्कृतिक सीमाओं से परे होती है और पूर्व और पश्चिम दोनों कें दर्शकों को आकर्षित करती है।''

अपर्णा की कृतियों की प्रदर्शनी एआईएफएसीएस, दिल्ली; भारत कला महोत्सव, मुंबई; और प्रीतम लाल दुआ गैलरी, इंदौर में भी आयोजित की गई। मुंबई में आयोजित होने वाली प्रदर्शनी के महानगर के शोर–शराबे और भीड़ भाले माहौल में अद्भुत और आकर्षक साबित होने की उम्मीद है।